Mr. Speaker: No.

भी झोंकार लाल बेंरवाः इसकी जांच होती चाहिये। क्या इसोलिए रा ट्रपति शासन वहां

Mr. Speaker: Will he please sit down?

Now papers to be laid on the Table.

12.38 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE WHITE PAPER NO. XIII RE: CHINA

The Minister of External Affairs (Shri M. C. Chagla): I beg to lay on the Table a copy of White Paper No. XIII containing Notes, Memoranda and Letters exchanged between the Governments of India and China during February, 1966 to February, 1967. [Placed in the Library, see No. LT-188/67].

CINEMATOGRAPH AMENDMENT RULES & PRESS COUNCIL AMENDMENT RULES

The Deputy Minister in the Ministry of Information and Broadcasting (Shrimati Nandni Satpathy): On behalf of Shri K. K. Shah, I beg to lay on the Table:---

- A copy each of the following Notification under sub-section
 of section 8 of the Cinematograph Act, 1952—
 - (i) The Cinematograph (Censorship) Amendment Rules, 1967, published in the Notification No. G.S.R. 279 in Gazette of India dated the 4th March, 1967.
 - (ii) The Cinematograph (Censorship) Second Amendment Rules, 1967, published in Notification No. G.S.R. 405 in Gazette of India dated the 25th March, 1967. [Placed in Library. See No. LT-189/67].

(2) A copy of the Press Council (Third Amendment) Rules, 1966, published in Notification No. G.S.R. 1974 in Gazette of India dated the 24th December, 1966, under sub-section (3) of section 22 of the Press Council Act, 1965. [Placed in the Library, See No. LT-190/67].

12.39 hrs.

PRESIDENT'S ASSENT TO BILLS

Secretary: Sir, I lay on the Table following eight Bills passed by the House of the Parliament during the current Session and assented to by the President since a report was last made to the House on the 18th March, 1967:—

- (1) The Appropriation Bill, 1967.
- (2) The Appropriation (Vote on Account) Bill, 1967.
- (3) The Appropriation (Railways) Bill, 1967.
- (4) The Appropriation (Railways) Vote on Account Bill, 1967.
- (5) The Goa, Daman and Diu Appropriation Bill, 1967.
- (6) The Goa, Daman and Diu Appriation (Vote on Account) Bill, 1967.
- (7) The Rajasthan Appropriation Bill 1967.
- (8) The Rajasthan Appropriation (Vote on Account) Bill, 1967.

12.40 hrs.

STATEMENT RE. ACCOUNT OF LATE PRIME MINISTER NEHRU IN A FOREIGN BANK

डा॰ राम मनोहर लोहिया (कन्नौज): ग्राप्यक्ष महोदय, माननीब गृह मंत्री जी के सस्रत्य को सुधारने की मुझे मनुमति दीजिए ।

[डा0 राम मनोहर लोहिया] मंत्री जी ने 20 मार्च को सदन को बताया कि मेरा कथन सम्पूर्ण झुठा कथन था। उन्होंने कहा कि श्री मोरारजी देसाई किसी बैंक में नहीं गये। मैंने प्रत्यक्ष या ग्रप्रत्यक्ष किसी रूप में ऐसा नहीं कहा था । किसी ग्रादमी के मंह में कोई बात डाल देना जो उस ने कभी न कही हो ग्रौर फिर उसे झुठा कह देना एक गन्दा काम है। हो सकता है कि मंत्री जी इस बार कहें कि मैंने श्री देसाई द्वारा बैंक के खाते के निरीक्षण की बात कही है. यद्यपि बैंक में जाने की बात नहीं कही । ग्रसत्य इसी तरह बोला जाता है ग्राधे सच को ग्राधे झठ के साथ मिला दिया जाये। तथ्य इस प्रकार है। भूतपूर्व प्रधान मंत्री नेहरू जी का खाता लायडज बैंक इंग्लिस्तान में था । स्वतन्त्रता के बाद विदेशी मद्रा के नए कायदे कानून के श्रन्सार उस खाते को खत्म कर देना चाहिए था । किन्त 1947 से 1960 के ग्रासपास तक यानी तेरह वर्ष तक एक या दूसरे गैर कानुनी रूप में चलता रहा। हो सकता है कि शुरू में प्रधान मंत्री जी की केवल लापरवाही रही हो । बाद में उनको विदेशों में ग्रपने या मपने सम्बन्धियों के लिए प्रैसा खर्च या जमा करने की जरूरत पड़ने लगी हो । जब एक म्रादमी ने फोटो समेत कूछ चीजों का इस्तेमाल करना शरू किया, तब प्रधान मंत्री जी बडे घबराये ग्रौर उन्होंने वित्त मंत्री जी को यह मामला रफा दफा करने को कहा । भारत के वित्त मंत्री ने इस सन्म्बध में इंग्लिस्तान के वित्तमंत्री (चांस्लर ग्राफ दी एक्सचैकर) से बात की । उस वित्त मंत्री ने बैंक श्राफ इंग्लैंड के गवर्नर से बात की । उस गवर्नर ने लायडस बैंक के ग्रधिकारी से कहा । तब भारतीय प्रधान मंत्री के विदेशी मदा के उस गैर कानूनी खाते को ऐसे साफ कर दिया गया कि ग्राज उसके ग्रवशेष तक नहीं हैं। गह मंत्री जी के श्वसत्य का एक ग्रौर प्रमाण मैं उन्हीं के 20 मार्च के भाषण से देता हूं। उन्होंने ग्रंग्रेजी में कहा थाः

His publisher had naturally some credits but they were completely subject to regulations, the Foreign Exchange Regulations.

इस वाक्य का किसी तरह कोई झर्थ नहीं निकलता, केवल एक कि जब म्रादमी को कोई बात छिपानी हो या झठ बोलना हो तब एसे उलझे हए वाक्य बोल देता है। प्रकाशक अपनी भ्रलग भ्रलग किताबों के मलग म्रलग खाते रखता है। एक एक किताब की एक एक प्रति की बिक्री होने पर उसके लेखक को न कुछ देता है ग्रौर न लेखक केखाते में जमा करने लगता है। हर छठे महीने या साल या दो साल में प्रकाशक परा हिसाब लगा कर लेखक को चैक देता है ग्रौर इसलिए जमा उधार का कभी किसी मंजिल पर कोई सवाल नहीं उठता। जहां कोई एसा चैक किसी भारतीय लेखक को मिला उसी क्षण से विदेशी मुद्रा के कायदे कानून उस पर लागू हो जाते हैं ।

माननीय गृह मंत्री धौर उनके जैसे लोगों ने हमेशा मुझ पर हमला किया है कि मुझे कुछ नेहरू खानदान से रोगग्रस्तता है । बात कुछ उलटी है । किसी भी पन्थ के प्रनुयायी घपने सब से बड़े प्रादमी का नाम ऐसे रटा करते हैं, खास तौर से पिछले पंद्रह वर्ष से भारत में यह हुमा है कि उसे रोगग्रस्तता कहना चाहिए । किसी पन्थ को हानिकारक समझने वाले लोगों का धर्म हो जाता है कि उस पन्थ के उद्गम स्थान पर हमला करे भौर उसके सब से बड़े प्रादमी की ग्रसलियत को खोले । मैंने इससे ज्यादा कुछ नहीं किया ।

भारत की कुल सालाना ग्रामदनी भारत सरकार के हिसाब से एक ग्ररब 80 ग्ररब रुपया है, मेरे हिसाब स डेढ़ खरब । एक प्रतिशत जनता यानी पचास लाख ग्रादमी इस राष्ट्रीय ग्रामदनी का 33 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक यानी 50 ग्ररब से 75 2381 Foreign Accounts CHAITRA 13, 1889 (SAKA) of Shri Jawaharlal 2382 Nehru (St.)

मरब रुपये तक उड़ा लेते हैं। 50 लाख के लिए 75 मरब रुपये ग्रौर 49 करोड़ 50 लाख के लिए भो 75 मरब रुपये। इसका परिणाम गरीबी तो है ही लेकिन उसके साथ साथ पूंजी निर्माण ग्रौर खेती कारखाने के सुधार का ग्रसम्भव होना भी। गैर कानूनी विदेशी मुद्रा के खाते इसी वैभव ग्रौर फिजूलखर्ची की एक कड़ी हैं। सन् 1947 के बाद से ग्रब तक का युग "खान्नो ग्रौर बटोरो" का रहा है।

यह अद्भुत बात है कि मैंने जो बात श्री देसाई को ले कर कही उसका जवाब श्री चह्वाण ने दिया । श्री देसाई को साफ झूठ बोलते हुए शायद हिचक हुई होगी । यब वह ग्रगर ग्रसत्य बोलें भी तो ग्रारम्भ में उनका न बोलना ग्रौर श्री चह्वाण का बोलना बहुत बड़ा तर्क रहेगा ।

The Minister of Home Affairs (Shri Y. B. Chavan): Mr. Speaker, Sir, the facts regarding the account of Pandit Jawarharlal Nehru were not within my personal knowledge, but I had obtained the necessary information before making my statement in the Lok Sabha on the 20th March. I once again give the facts which are as follows:

Shri Jawaha: lal Nehru did not have an account in the Lloyds Bank in England. He however had a royalty account with his publisher in London. His publisher credited all the royalties accrued on his book in this account and the amount was repatriated to India from time to time.

भी मधुलिमये (मंगर) : किस बैंक में है ?

Shri Y. B. Chavan: This account was within the knowledge of the Reserve Bank of India and the Ministry of Finance. The utilisation from this account was well within the authorised limit imposed by the Reserve Bank of India. There was no occasion whatever for any inspection or checking of the account by either the Finance Minister or any other authority. It is totally incorrect to say that the Finance Minister eve: discussed this matter with the Chancellor of the Exchequer or with any Bank in England.

डा० राम मनोहर लोहियाः इतने पर खत्म हो जाता है यह मामला ?

The Deputy Prime Minister and Minister of Finance (Shri Morarji Desai): Since my name has been mentioned, may I explain? I hope the hon. Member will not draw any unfair conclusions because I did not speak on that day. I was not called upon to speak on that day. As the Home Minister referred to it.

I happened to be the Finance Minister at that time in 1960 when this question came up. There is, I think, a little misunderstanding in this. There was no question of the Prime Minister Jawaharlal Nehru having any unauthorised account in England, and there was no question of anybody bringing it to his notice or to my notice about this with any photographs or anything. This is all a story made up by somebody and conveyed to my hon. frierd, Dr. Ram Manohar Lohia. He seems to have believed it.

What has happened was this, that the Prime Minister himself referred to me his account there, and asked me as to how he could spend the money, because he wanted to spend some money at that time on a re'ative. I saw the account, and then, all the facts were verified by me. Till then there was no occasion for me to verify the facts. The Prime Minister had an account even before 1947. The rules made in 1947 allowed everybody in India who had accounts there to keep their accounts, calling them pre-zero accounts. Those moneys they were allowed to keep there. If they wanted to spend anything, they had to convey the expenditure to the Reserve Bank,

2384

[Shri Morarji Desai]

that was the only obligation that these people had on them. Then, if any money credited after this, was earned after 1947, that had to be repatriated to India immediately. That was the rule, and that is the rule which obtains even today.

The Prime Minister received his money from his publishers, the royalty moneys; the publishers credited that money which accrued to him from time to time in that account, and the money which was credited after 1947 was being repatriated here.

Then this question arose about the pre-zero account which was there. I think about £ 3,000 or some such thing was in the pre-zero account. I found that the money that was spent by the Prime Minister during nine or ten years of that period amounted to something like £ 2,000 and odd. I am saying all this from memory.

डा॰ राम मनोहर लोहिया : चालीस हजार रुपये।

Shri Morarji Desai: This is all not correct.

डा० राम मनोहर लोहिया : माज के दाम में चालीस हजार रुपये।

Shri Morarji Desai: The money that was spent there from this account was less than the pre-zero account that he had with him. The only question that arose at that time which I raised was that as the publisher was crediting the money to his account from time to time, somebody might say that the publisher was keeping the money for some time and then doing it, which would not be a correct thing; it would, therefore, be better that the money, as it accrued from those who had to pay the royalty, was credited immediately in the account by themselves, and not through the publisher, and that was done at that time. There was no question of my talking to the Chancellor of England on this matter. I have never had any talk. I do not know whoever had this brainwave or figment of imagination which was conveyed to Dr. Ram Manohar Lohia. This is entirely a lie. I had nothing to talk to the Chancellor about this, and there was no question of doing away with any account from any bank. The Prime Minister himself after a year or so closed his account and finished the matter.

डा० राम मनोहर लोहिया : मध्यक्ष महोदय, म्राप इस मामले को विशेषाधिकार समिति को भेजिये । यह विशेषाधिकार समिति में जाने लायक सवाल बन गया है। दोनों में से कोई न कोई जरूर झसत्य बोल रहा है ।

श्वी मत्र लिमये: दो मंत्रियों के बयानों में टकराव है, परस्पर-विरोध है । एक साहब कहते हैं, "बैंक एकाउंट नहीं है " ग्रीद दूसरे कहते हैं, "बैंक एकाउंट है"।

12.54 hrs.

ESSENTIAL COMMODITIES (AMENDMENT) BILL*

The Minister of Commerce (Shri Dinesh Singh): I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Essential Commodities Act, 1955 and to continue for a further period the Essential Commodities (Amendment) Act, 1964.

Mr. Speaker: The question is:

"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Essential Commodities Act, 1955 and to continue for a further period the Essential Commodities (Amendment) Act, 1964."

The motion was adopted.

Shri Dinesh Singh: I introduce the **Bill**.

*Published in Gazette of India Extraordinay, Part II, section 2, dated 3-4-67.